समीक्षा

जुलाई-सितंबर, 2003

अंक : 2 • वर्ष : 36

संपादक

गोपाल राय : हरदयाल

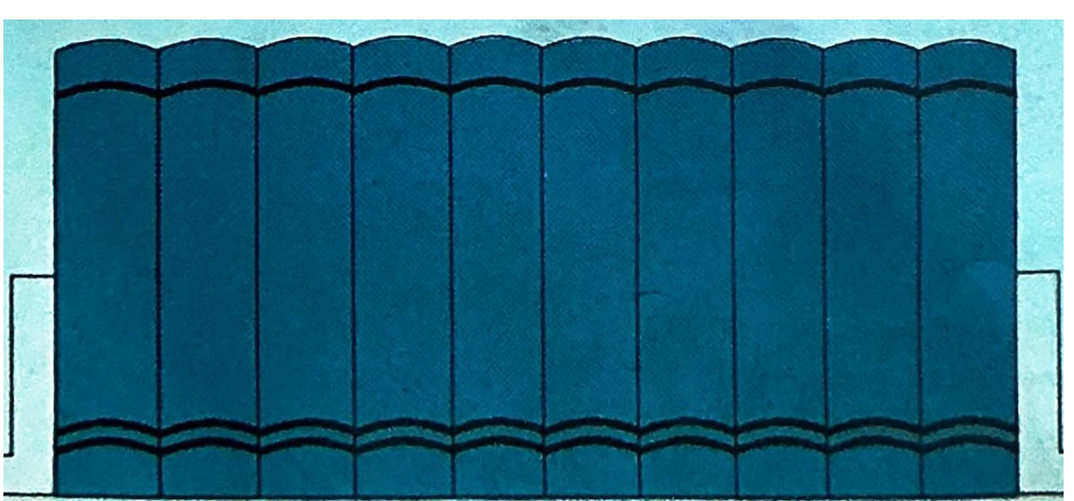

□ सीधा-सादा रास्ता □ आधुनिक हिन्दी साहित्य : विवाद और विवेचना □ सुखिया □ सूत्रधार □ समय का हिसाब □ कश्मीर की बेटी □ अग्निपर्व □ सबसे बड़ा सत्य □ स्वाधीनता और समाजवाद □ सुरंग में सुबह □ सलाम आखिरी □ विद्रोही □ दिन के साथ □ ठहरा हुआ पल □ तुलसी के हिय हेरि □ टूटते दायरे □ आलोचना की साखी □ खामोश नंगे हमाम में हैं □ सर्वोत्तम सच □ निर्मल वर्मा और उत्तर-उपनिवेशवाद □ परिवार अखाड़ा

समीक्षा

जुलाई-सितंबर, 2003
वर्ष 36 : अंक 2

प्रकाशन-तिथि :
20 सितंबर, 2003

संपादक
गोपाल राय : हरदयाल
सह-संपादक : सत्यकाम
प्रस्तुति : श्रीकृष्ण

सम्पर्क :
संपादक, समीक्षा
एच-2, यमुना
इ.गा.रा.मु. विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नयी दिल्ली-110068
फोन : 26853534

वार्षिक सहयोग राशि : 80.00
प्रेषण तथा अन्य सेवा शुल्क : 20.00
व्यक्ति ग्राहकों के लिए रु. 10/- की छूट
आजीवन सहयोग राशि (संस्थाएं) : 1500.00
आजीवन सहयोग राशि (व्यक्ति) 1000.00

निवेदन

- कृपया चेक अथवा ड्राफ्ट 'समीक्षा' के नाम (देय दिल्ली-नयी दिल्ली) नये पते पर ही भेजें। दिल्ली के बाहर के चेक में शुल्क की राशि के साथ रु. 35/- बैंक कमीशन जोड़ दें।
- मनीआर्डर के कूपन पर प्रेषित धनराशि और प्रेषक का नाम-पता अवश्य लिखें।
- कोई अंक न मिलने पर उसकी सूचना शीघ्र दें।
- शुल्क के बिल का भुगतान यथाशीघ्र करें।

व्यक्ति ग्राहकों से निवेदन है कि वे अपनी शुल्क-अवधि के समाप्त होते ही नये वर्ष का शुल्क भेज दें, ताकि हमें पत्र न लिखना पड़े और समीक्षा की आपूर्ति भी जारी रहे।

अनुक्रम

सम्पादकीय : हरिश्चन्द्र मैगजिन का पुनर्मुद्रण	गोपाल राय	2
श्रद्धांजलि		4
पत्र-प्रतिक्रिया		5
वस्तुनिष्ठ और विश्वसनीय आलोचना—आधुनिक हिन्दी साहत्य : विवाद और विवेचना	मधुरेश	6
सृजनात्मक प्रत्युत्तर : सीधा-सादा रास्ता	हरदयाल	9
तुलसी के हिय हेरि : तुलसी साहित्य की सच्ची परख	सत्यकेतु सांकृत	14
एक दलित कथाकार का आत्मसंघर्ष—सूत्रधार	सत्यकाम	19
कैसी 'आलोचना की साखी'?	मधुरेश	23
चार काव्य-संकलन—जिरह फिर कभी होगी; रास्ते के बीच; चिर सन्धान; मुट्ठीभर जमीन	जगदीश्वर प्रसाद	26
वैविध्य और विस्तार की कविताएं—समय का हिसाब	अर्चना त्रिपाठी	31
दो ऐतिहासिक उपन्यास—कश्मीर की बेटी; अग्निपर्व	वीरेन्द्र सक्सेना	32
संघर्ष की कथा : सुखिया	आशा श्रीवास्तव	34
विसंगतियों, मिथ्याचारों एवं पाखंडों का साक्षात्कार—सबसे बड़ा सत्य	मधु सन्धु	35
खामोश नंगे हमाम में हैं	अर्चना त्रिपाठी	37
अंतरंग और आत्मीय साक्ष्य—स्वाधीनता और समाजवाद	मधुरेश	38
एक अच्छी कविता की थीम उपन्यास के भीतर : सुरंग में सुबह	प्रेम शशांक	40
देह बाजार का यंत्रीकरण—सलाम आखिरी	मधु संधु	42
संवाद और संवाद—परिवार अखाड़ा	सिद्धनाथ कुमार	44
राष्ट्रीय चेतना का नाटक—विद्रोही	सिद्धनाथ कुमार	45
विवाहेतर प्रेम का 'सर्वोत्तम सच' : कितना सच	चन्द्रलेखा	47
प्रतिवाद की ऊर्जा से दीप्त कहानी-संग्रह—दिन के साथ	वेदप्रकाश अमिताभ	49
निर्मल वर्मा और उत्तर-उपनिवेशवाद	प्रेम शशांक	51
टूटते दायरे	विपिनबिहारी ठाकुर	53
रोमानियत पर मनोवैज्ञानिक दृष्टि—ठहरा हुआ पल	आदर्श सक्सेना	54

सम्पादकीय

हरिश्चन्द्र मैगजिन का पुनर्मुद्रण

हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, इलाहाबाद द्वारा 'हरिश्चंद्र मैगजिन' का पुनर्मुद्रण एक ऐसा सराहनीय काम है, जिसकी जितनी भी प्रशंसा की जाये, कम होगी। भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा 'हरिशचंद्र मैगजिन' पत्रिका का संपादन-प्रकाशन 15 अक्टूबर, 1873 में आरम्भ हुआ जो आठ अंकों के बाद जून, 1874 में 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' नाम से प्रकाशित होने लगी थी। इसके पूर्व 1868 ई. में ही उन्होंने प्राचीन कवियों की कविताओं को प्रकाश में लाने के उद्देश्य से 'कविवचनसुधा' नामक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया था, जो कुछ दिनों तक 'हरिश्चंद्र मैगजिन' के साथ-साथ प्रकाशित होती रही थी। 'हरिश्चंद्र मैगजिन' के मुखपृष्ठ पर अंग्रेजी में 'ए मन्थली जर्नल पब्लिश्ड इन कनेक्शन विथ दि कविवचनसुधा' भी मुद्रित होता था। ये तीनों ही पत्रिकाएं अपने मूल रूप में दुर्लभ हो चुकी हैं और इनमें उपलब्ध साहित्यिक साक्ष्यों के लिए शोधकर्ताओं और आलोचकों को गौण स्रोतों पर निर्भर करना पड़ता है। 'हरिश्चन्द्र मैगजिन' के पुनर्मुद्रण से यह कठिनाई कुछ हद तक दूर हो गयी है। यदि सम्मेलन 'कविवचनसुधा' और 'हरिश्चन्द्र चंद्रिका' का भी 'हरिश्चन्द्र मैगजिन' की ही तरह पुनर्मुद्रण करा दे तो उसके यश में चार चांद लग जायेंगे।

पुनर्मुद्रित 'हरिश्चंद्र मैगजिन' को देखकर पहला भ्रम उसके नाम को लेकर टूटता है। इसका शीर्षक रोमन लिपि में HARISHCHANDRA'S MAGAZINE रूप में छपता था। हिंदी में इसका सही रूपांतर होता 'हरिश्चंद्र की मैगजिन'। पर चुस्ती की दृष्टि से 'हरिश्चन्द्र मैगजिन' नाम ही उपयुक्त है। दूसरी बात यह कि इसके मुखपृष्ठ पर छपनेवाली सूचनाएं अंग्रेजी भाषा और रोमन लिपि में मुद्रित होती थीं। यहां तक कि विषय-सूची भी अंग्रेजी और रोमन लिपि में ही होती थी। पत्रिका के विषय के संबंध में सामान्य घोषणा यह छपती थी कि इसमें 'Articles on Literary, Scientific, Political and Religious Subjects, Antiquities, Reviews, Dramas, History, Novels, Political Selections, Gossip, Humour and Wit रहेंगे। इस घोषणा में प्रदत्त सूची में 'नॉवेल' का नाम सबसे अधिक चौंकानेवाला है। इससे यह प्रतीत होता है कि उस समय तक हरिश्चंद्र 'नॉवेल' शब्द से तो परिचित हो चुके थे, पर बंगला में तब तक प्रचलित हो चुका शब्द 'उपन्यास' या तो उनकी नजरों से नहीं गुजरा था या उसे उन्होंने स्वीकार नहीं किया था। जहां तक मुझे ज्ञात है, इसके पहले किसी भी हिंदी लेखक ने 'कथा' के लिए 'नॉवेल' शब्द का प्रयोग नहीं किया था। जहां तक कि 'राबिन्सन क्रूसो' के हिंदी अनुवाद (प्र. का. 1860) को भी 'इतिहास' कहा गया था, 'नॉवेल' नहीं। इसी प्रकार 'फूलमणि और करुणा' के अनुवाद को (प्र. का. 1865), जिसे कुछ लोग उपन्यास मानते हैं, 'वृत्तान्त' की संज्ञा दी गयी थी। 'नावेल' की अवधारणा भी तब तक हिंदी में नहीं आयी थी, यद्यपि गौरीदत्त के 'देवरानी जेठानी की कहानी' के रूप में 'नॉवेल' हिंदी में चुपके से प्रवेश तो कर ही गया था। पर गौरीदत्त ने कहा उसे 'कहानी' ही। गौरीदत्त को अपनी कहानी में 'नये' होने का बोध था, उन्होंने लिखा था—"मैंने इस कहानी को नये रंग-ढंग से लिखा है।" पर सम्भवतः उन्हें अंग्रेजी शब्द 'नॉवेल' या बंगला में प्रचलित हो रहे 'उपन्यास' शब्द से परिचय नहीं था।

हरिश्चंद्र की 'नावेल' विषयक अवधारणा क्या थी, इसका कुछ अनुमान 'हरिश्चंद्र मैगजिन' के प्रथम अंक से ही धारावाहिक रूप में 'कादम्बरी' के अनुवाद के प्रकाशन से किया जा सकता है। 'कादम्बरी' का अनुवाद बाबू गदाधर सिंह ने मूल संस्कृत से नहीं, बल्कि उसके बंगला अनुवाद से किया था। पत्रिका के 'नावेल' के स्तंभ में इसे प्रकाशित करने का मतलब ही यह है कि हरिश्चंद्र 'कादम्बरी' को 'उपन्यास' मानते थे। इस प्रसंग में यह भी स्मरण कर लेने योग्य है कि मराठी में 'नॉवेल' के लिए 'कादम्बरी' शब्द ही